बाल्यावस्था मे ही जटिल रोगों की पहचान पर जोर देते हैं पारंपरिक चिकित्सक

* 300 प्रकार की घरेलू औषधियों का प्रयोग
* 40 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान

वनौषधि राज्य छत्तीसगढ़ के निवासी 300 तरह की घरेलू औषधियों और पारंपरिक चिकित्सक 115 प्रकार की वनौषधियों की सहायता से विभिन बाल रोगों की चिकित्सा करते है । यद्यपि सभी पारंपरिक चिकित्सक बाल रोग की चिकित्सा करते हैं पर अब तक 40 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है । राज्य मे वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने यह खुलासा किया है ।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सक छोटे बच्चों को कुछ समय तक अपनी निगरानी मे रखकर उनके हाव-भाव से यह पता लगाते है कि कौन से जटिल रोग भविष्य मे उन्हे हो सकते है । बाल्यावस्था से ही हृदय और मधुमेह रोगियों की पहचान ये पारंपरिक चिकित्सक कर लेते है और फिर पालकों की अनुमति लेकर वनौषधियों पर आधारित ऐसी विशेष दिनचर्या का निर्धारण करते हैं जिसके पालन से ये रोगी आजीवन घोर कष्टों से बचे रहते है । यह अनूठा पारंपरिक ज्ञान केवल छत्तीसगढ़ तक ही सीमित है और जटिल रोगों की चिकित्सा मे जुटे आधुनिक शोधकर्ताओं के लिये बहुत उपयोगी साबित हो सकता है । राज्य मे बच्चों को रोगों विशेषकर संक्रामक रोगों से बचाने के लिये ताबीज और माला का प्रयोग लोकप्रिय है । इन ताबीजों और मालाओं को प्रभावी बनाने मे वनौषधियाँ अहम भूमिका निभाती है । इन वनौषधियों मे ज्यादातर वनौषधियाँ आस-पास खरपतवारों के रुप मे उगती हैं । सर्वेक्षणों से अब तक वनौषधियों के विभिन्न पौध भागों से तैयार 45 प्रकार के ताबीजों और मालाओं की पहचान हो चुकी है । आम लोगों के साथ पारंपरिक चिकित्सक भी इस तरह के प्रयोग को मान्यता देते है । छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक फुडहर नामक औषधीय खरपतवार और कुल्थी की दाल की सहायता से विशेष प्रकार का काढ़ा तैयार करते हैं । यह काढ़ा उन बाल रोगियों को लिये वरदान माना जाता है जिन्हें कि यकृत संबंधी परेशानियाँ होती है । वर्ष के कुछ माह इसका प्रयोग सामान्य बच्चों को यकृत संबंधी रोगों से बचकर रखता है । छोटे बच्चों को होने वाले मूत्र संबंधी रोगों की चिकित्सा कांकेर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मेंहदी की पत्तियों के ताजा रस से करते है । गंडई- सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक गोंदला नाम वनौषधि के भूमिगत भागों का प्रयोग चूर्ण के रुप मे छोटे बच्चो को होने वाले ज्वर की चिकित्सा मे करते है ।

बाल रोगों में आधुनिक औषधियों के बढ़ते दखल से पारंपरिक चिकित्सक चिन्तित है । उनका मानना है कि पूरे जीवन मे कम से कम औषधीयो का प्रयोग होना चाहिए । बाल्यावस्था को तो औषधियों से पूर्णत: मुक्त रखा जाना चाहिये । बाल्यावस्था के औषधियि का अति सेवन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पर विपरीत प्रभाव डालता है । ग्रामीण और वनीय क्षेत्रों के पालक इन पारंपरिक चिकित्सकों के अनुभव का लाभ ले रहे हैं और आधुनिक दवाओं का प्रयोग कम से कम कर रहे है ।